प्रश्न ६—वैदिक कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की प्रमुख विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए। (उ० प्र० इंटर १९६९)

अथवा

वैदिक काल से आप क्या समझते हैं ? इस काल की सभ्यता एवं संस्कृति पर प्रकाश डालिए।

अथवा

ऋग्वेद का भारतीय इतिहास में क्या महत्व है ? उसमें इस युग के समाज का जो चरित्र मिलता है, उसका संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (१९६२, ६४, ६६)

अथवा

वैदिक युग में आर्यों के आर्थिक तथा धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालिए। (उ० प्र० इंटर १९७०)

ऋग्वेद—ऋग्वेद सब से अधिक प्राचीन वेद है। अतएव ऋग्वेद की सभ्यत सबसे अधिक प्राचीन है। उत्तर वैदिक काल में ऋग्वेद की सभ्यता का क्रमशः विका होता गया है और उसमें परिवर्तन होते गये हैं।

ऋग्वेद के महत्व के सम्बन्ध में श्री जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है कि "ऋग्वे जो कि पहला वेद है सम्भवतः मानव जाति का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें ह मानव मस्तिष्क के विचारों की अभिव्यक्ति, कविता की आभा और प्राकृतिक सौंदर्य त

रहस्य के प्रति आनन्द के भाव पाते हैं । इन प्राचीन स्रोतों में हम उन लोगों का साहसपूर्ण मानसिक अनुसंधान पाते हैं जो इस जगत को और मनुष्य के जीवन के महत्व को खोजना चाहते थे । यहाँ पर सबसे पहले भारत ने वह खोज प्रारम्भ की जिनका उसने हमेशा अनुसरण किया है ।"

ऋग्वेद प्रमुख रूप से धार्मिक ग्रन्थ है किन्तु इसमें आर्यों की प्राचीनतम सभ्यता के विभिन्न रूपों का विशद वर्णन है । ऋग्वेद की ऋचाओं में एक सुसंगठित सामाजिक जीवन का चित्रण प्राप्त होता है और इस सम्बन्ध में स्मिथ का यह कथन सही मालूम पड़ता है कि "ऋग्वेद एक सुसंगठित जनसमूह और सुव्यवस्थित समाज तथा पूर्ण विकसित सभ्यता की हमें जानकारी कराता है ।"

"Rig Veda points to the settled people, an organised society and full grown civilisation."
Rigveda

ऋग्वेद का महत्व केवल भारत के ही इतिहास में नहीं वरन् विश्व के भी इतिहास में है । किसी भी साहित्यिक कृति के द्वारा हमें इतनी अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती है जितनी कि ऋग्वेद से । मैक्समूलर ने लिखा है कि संसार के इतिहास में जितने बड़े अभाव की पूर्ति ऋग्वेद करता है उतनी किसी भी भाषा का कोई भी साहित्य ग्रन्थ नहीं करता । यह हमें उस युग का ज्ञान प्राप्त कराता है जिसके सम्बन्ध में जानने के लिए हमारे पास कोई दूसरा साधन नहीं है ।"

ऋग्वेद में आर्यों के जीवन का जो विशद वर्णन मिलता है।उससे उनके राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है ।

वैदिक आर्यों का सामाजिक जीवन

ऋग्वेद में भारतीय आर्यों के प्राचीनतम समाज का बड़ा विशद चित्र मिलता है । इसका अध्ययन हम निम्नलिखित ढंग से कर सकते हैं :—

सामाजिक रचना

आर्यों की सामाजिक रचना मुख्यतः वर्ण-व्यवस्था पर आधारित थी । वर्ण-व्यवस्था की उत्पत्ति कदाचित श्रम-विभाजन के दृष्टिकोण से हुई थी । ऋग्वेद में वर्ण-व्यवस्था का जो वर्णन किया गया है उससे विदित होता है कि मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक कार्यों के लिए ब्राह्मण, सैनिक और राजनीतिक कार्यों के लिए राजन्य अथवा क्षत्रिय, आर्थिक कार्यों के लिए विश अथवा वैश्य और समाज की सेवा के लिए शूद्र थे । एक वर्ण से दूसरे वर्ण में परिवर्तित होना सम्भव था । इनमें पारस्परिक खान-पान आदान-प्रदान तथा शादी-विवाह आदि होता रहता था । इसमें धीरे-धीरे जटिलता उत्पन्न होने लगी जिसके कारण सामाजिक विकास में बाधायें उत्पन्न होने लगीं ।

सुखी परिवारिक जीवन

आर्यों के सामाजिक संगठन का आधार कुटुम्ब था । कुटुम्ब का स्वामी परिवार का सबसे वयोवृद्ध होता था । इसको गृहपति कहा जाता था । परिवार के सभी सदस्यों को गृहपति की आज्ञा माननी पड़ती थी । वह भी अपने परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता था । ऋग्वेद से यह स्पष्ट होता है कि बच्चों के ऊपर पिता का कठोर नियन्त्रण रहता था । एक मन्त्र से यह